के.रि.पु.बल
शौर्यगाथाएँ
Vol.9
संसद के प्रहरी
सत्य घटनाओं पर आधारित
HEMANT ISHAN

अशोक चक्र

अशोक चक्र शांतिकाल में दिया जाने वाला भारत के सैन्य सम्मानों में सर्वोच्च सम्मान है। परमवीर चक्र के तुल्य यह सम्मान सैनिकों अथवा आम नागरिकों को देश की आंतरिक सुरक्षा, देश हित और देश की रक्षा के लिए वीरतापूर्ण व साहसिक कार्य या आत्म बलिदान हेतु दिया जाता है। इस पदक के साथ एक मासिक-भत्ता भी प्रदान किया जाता है जो कार्मिक की सेवानिवृत्ति के बाद भी जारी रहता है तथा कार्मिक की मृत्युपरांत उसके आश्रित को भी दिया जाता है।

शौर्य चक्र

वरीयता क्रम में कीर्ति चक्र के बाद आने वाला शौर्य चक्र वीरता का पदक है। यह सम्मान शांति काल में आतंकवाद विरोधी संचालन और दुश्मन के खिलाफ कार्यवाही के लिए देश के सिपाहियों अथवा गैर सिपाहियों को उनके द्वारा प्रदर्शित अदम्य साहस वीरता व अपने प्राणों तक को न्यौछावर करने के जज्बे के लिए प्रदान किया जाता है। शांतिकाल में यह पदक वीर चक्र के बराबर माना जाता है। इस पदक के साथ मासिक-भत्ता भी प्रदान किया जाता है जो कार्मिक की सेवानिवृत्ति के बाद भी जारी रहता है तथा कार्मिक की मृत्युपरांत उसके आश्रित को भी दिया जाता है। लगातार दूसरी बार यह पदक बार-एक और इसी क्रम में पुलिस पदक बार-दो और आगे इसी क्रमिक रूप से जारी रहता है।

CENTRAL RESERVE POLICE FORCE

केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल

शौर्यगाथाएँ

संसद के प्रहरी

CENTRAL RESERVE POLICE FORCE

प्रस्तुतिः संजय गुप्ता
लेखनः नितिन मिश्रा
चित्रांकनः हेमंत कुमार, विनोद कुमार
स्याहीकारः विनोद कुमार, जगदीश कुमार
आवरणः हेमंत कुमार एवं ईशान त्रिवेदी
रंग सज्जाः सुनील दस्तुरिया
शब्दांकनः मंदार गंगेले
संपादनः मनीष गुप्ता

Published By: Raj Comics (an imprint of Raja Pocket Books) on behalf of Directorate General C.R.P.F.

Raj Comics
330/1, Burari
Delhi-110084
www.rajcomics.com
Ph. 01127611410

Copyright © 2016 Central Reserve Police Force

Printed By: Prince Print Process

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed or transmitted in any form or by any means, including photocopy, recording or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of the publisher- For permission requests write to the publisher addressed “Attention: Permissions Coordinator” at the address below.

Inspector General (Operations)
Central Reserve Police Force
Email: igops@crpf.gov.in

13 दिसम्बर 2001, संसद भवन, नई दिल्ली।

लम्बे समय से आतंकवादियों और देशविरोधी ताकतों की वक्रदृष्टि नफरत के अंगारे बरसाकर संविधान के इस उच्चतम मंदिर पर हमले की साजिशें रचती आई हैं, जिन्हें नाकाम कर संसद भवन के सम्मान की रक्षा करने हेतु सदैव तत्पर हैं सी.आर.पी.एफ. के जांबाज सिपाही।

13 दिसम्बर 2001. समय 11:40 AM

आयरन गेट क्रमांक 01 से भीतर प्रविष्ट होते हुए संसद भवन की बिल्डिंग के गेट क्रमांक 11 की ओर तेजी से बढ़ रही थी वह सफेद एम्बेसडर। संसद भवन के इस मार्ग का प्रयोग केवल माननीय उप-राष्ट्रपति जी के काफिले के आवागमन के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

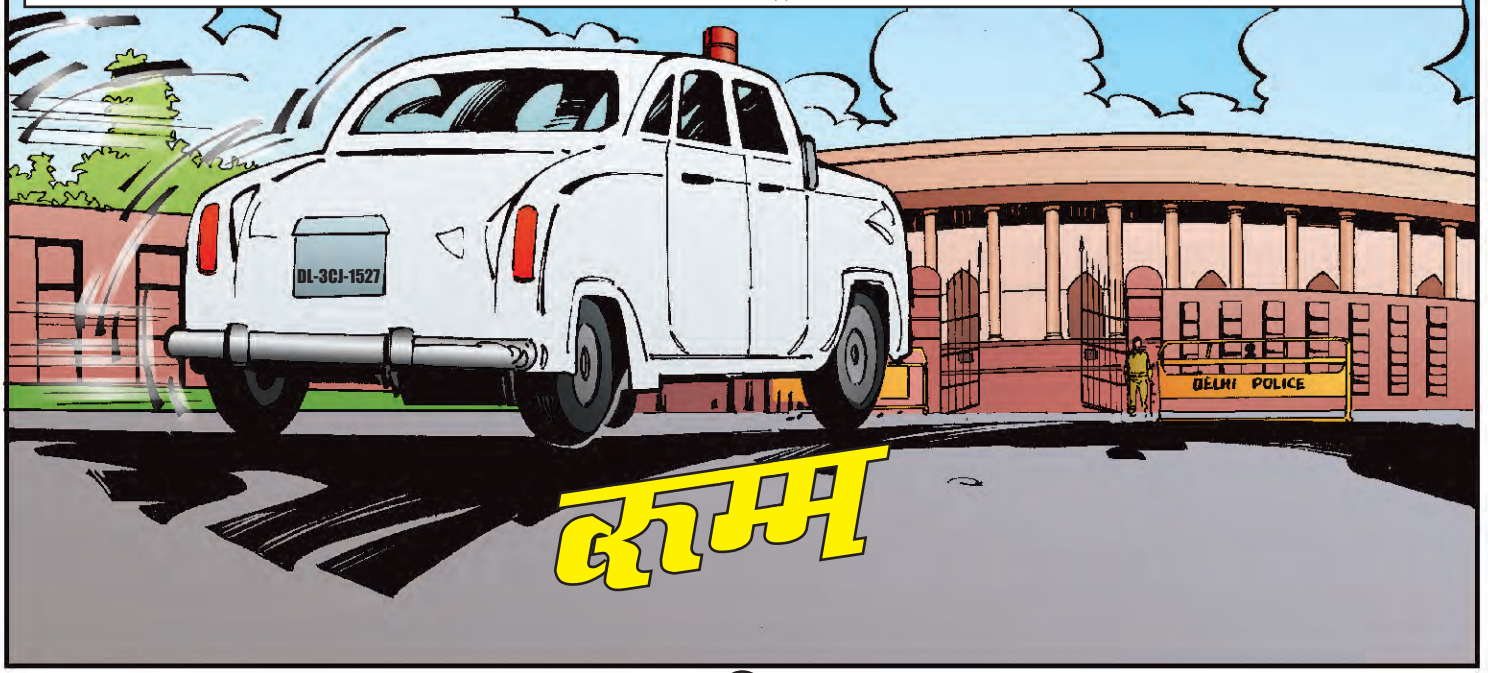

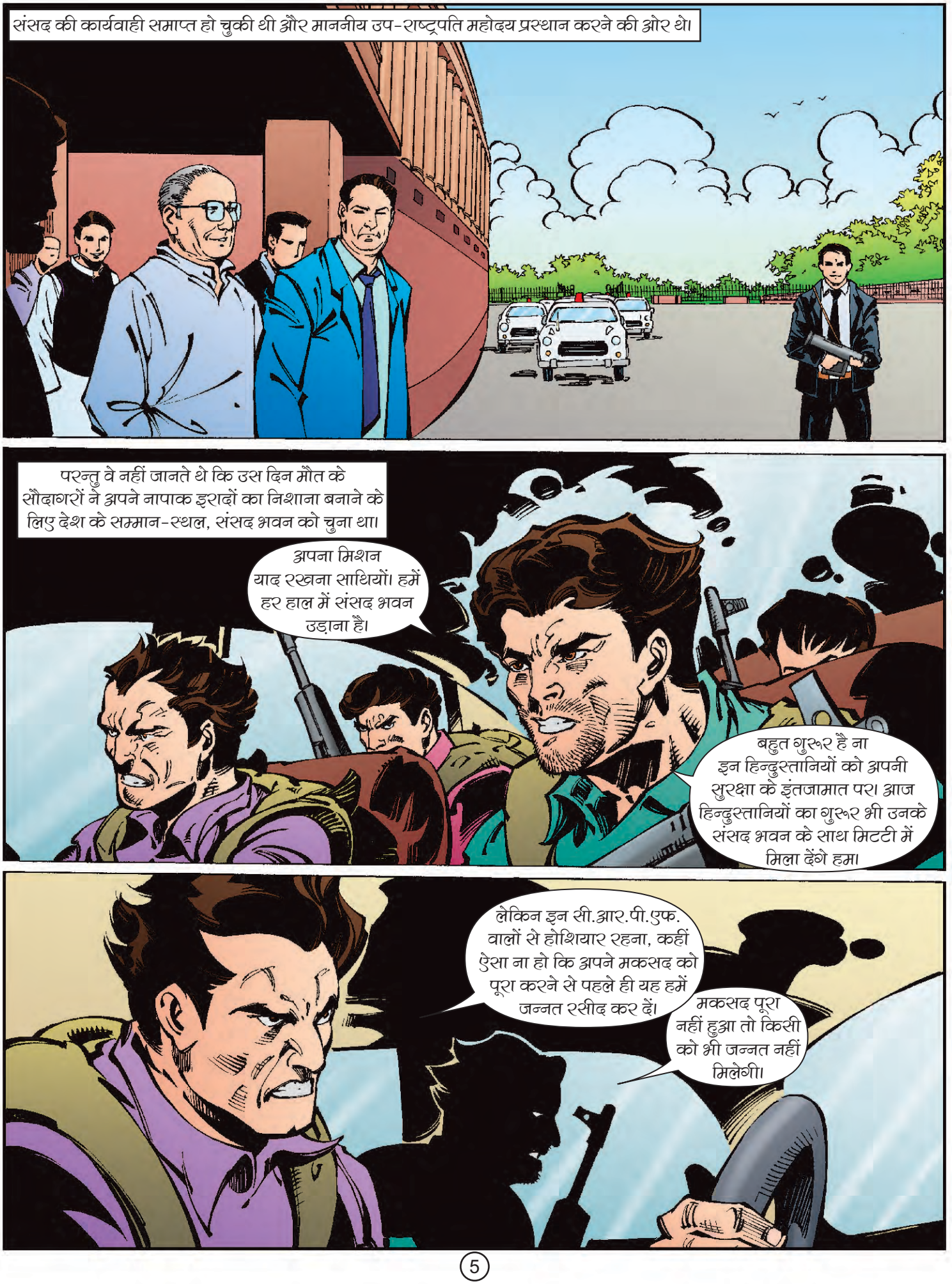

संसद की कार्यवाही समाप्त हो चुकी थी और माननीय उप-राष्ट्रपति महोदय प्रस्थान करने की ओर थे।
परन्तु वे नहीं जानते थे कि उस दिन मौत के सौदागरों ने अपने नापाक इरादों का निशाना बनाने के लिए देश के सम्मान-स्थल, संसद भवन को चुना था।
अपना मिशन याद रखना साथियों। हमें हर हाल में संसद भवन उड़ाना है।
बहुत गुरूर है ना इन हिन्दुस्तानियों को अपनी सुरक्षा के इंतजामात पर। आज हिन्दुस्तानियों का गुरूर भी उनके संसद भवन के साथ मिटटी में मिला देंगे हम।
लेकिन इन सी.आर.पी.एफ. वालों से होशियार रहना, कहीं ऐसा ना हो कि अपने मकसद को पूरा करने से पहले ही यह हमें जन्नत रसीद कर दें।
मकसद पूरा नहीं हुआ तो किसी को भी जन्नत नहीं मिलेगी।

जन्नत तो हम जा कर ही रहेंगे। इस गाड़ी को ऐसी रफ्तार दो जिसके सामने तूफान भी शरमा जाए।

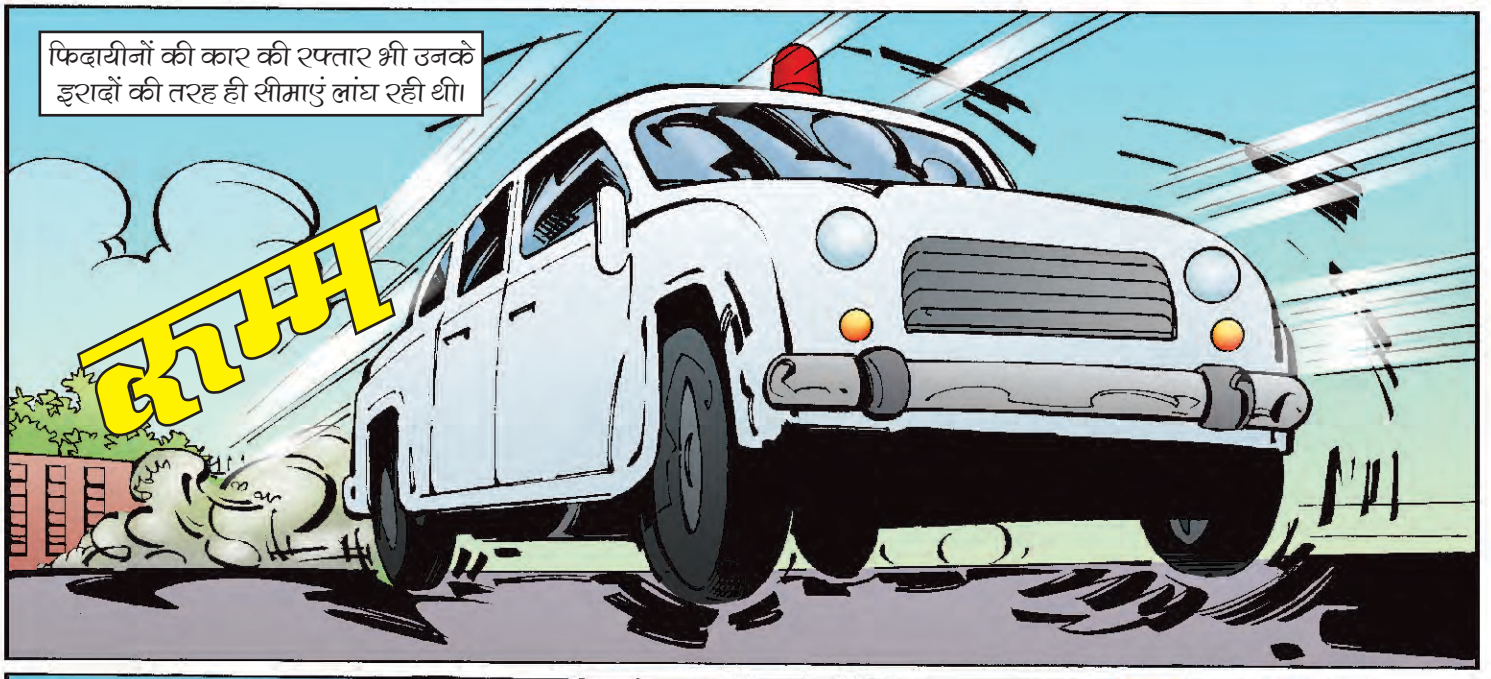
फिदायीनों की कार की रफ्तार भी उनके इरादों की तरह ही सीमाएं लांघ रही थी।
धम्म

श्री जे.पी.यादव फौरन चौकन्ने हुए और उन्होंने गाड़ी के ड्राईवर को रुकने का इशारा किया।
अरे! यह गाड़ी इतनी तेज रफ्तार से उप-राष्ट्रपति जी के काफिले की ओर क्यों बढ़ रही है?
ठहरो! गाड़ी रोको।
D.P.
D.P.

सिक्योरिटी वाला रुकने का इशारा कर रहा है। लेकिन रफ्तार जरा भी धीमी नहीं पड़नी चाहिए। गेट नंबर 11 पर खड़े गाड़ियों के काफिले तक पहुंचो।

ड्राईवर ने पूरी घृष्टता के साथ गाड़ी रोकने के बजाए और तेजी से आगे बढ़ा दी।

जे.पी.यादव फौरन एक्शन में आए और वॉकी-टॉकी पर सभी यूनिट्स को सावधान किया।

खतरा।

ऑल यूनिट्स एलर्ट! सफेद एम्बेसडर जो संसद भवन गेट क्रमांक11 की ओर बढ़ रही है उसमें कुछ संदिग्ध व्यक्ति हैं!

DL-3CJ-1527

D.P.

आतंकियों ने गाड़ी रिवर्स करके पीछे घुमाई। आतंकियों ने अपने अग्नेयास्त्रों का मुंह खोल दिया, मौत के शोले गरज उठे।

समय आ गया है कि हिन्दुस्तान के हुक्मरान और आवाम यह जान ले कि हमारी पहुंच उनके गिरहबान तक कितनी मजबूत हो गई है।

DELHI POLICE

तड़ तड़ तड़ तड़

जरूम

गोलियों का सबसे पहला निशाना बने श्री जे.पी. यादव और वहां उपस्थित अन्य पुलिसकर्मी। अपने कर्तव्य को निभाते हुए शहीद हो गए उपराष्ट्रपति की सुरक्षा में तैनात पुलिस कर्मी!।

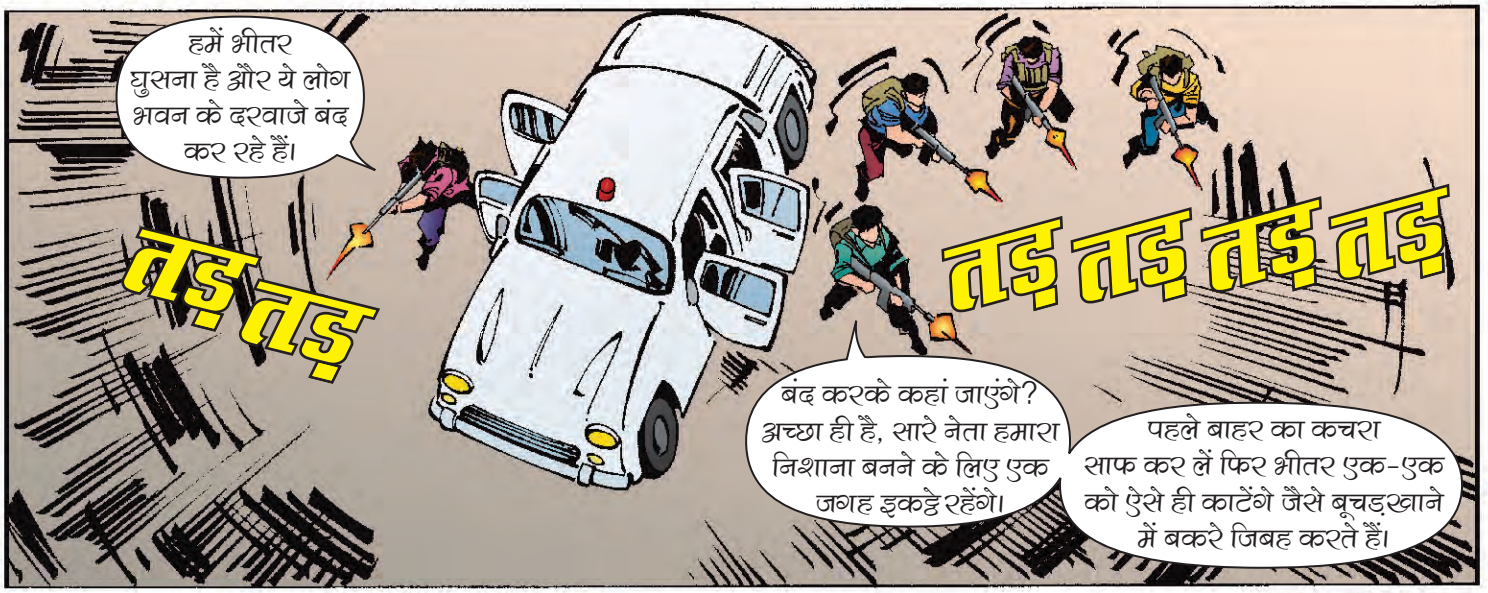

आयरनगेट 01 पर तैनात 88(M) बटालियन सी.आर.पी.एफ. की महिला कांस्टेबल कमलेश कुमारी जोकि तलाशी की ड्यूटी निभा रही थी, ने इस हमले के प्रति अपने साथी सिपाहियों को आगाह किया!

सभी जवान सावधान!! आतंकी हमला हुआ है।

C.R.P.

DELHI POLICE

DE

फिदायीनों के हथियारों से बरसते अंगारे और मौत का भय भी कमलेश कुमारी को उनके कर्तव्यपथ से डिगा नहीं पाए।

ये तो संसद भवन में प्रविष्ट होने की कोशिश करते दिख रहे हैं! मुझे इन पर नजर रखनी चाहिए

तड़ तड़ तड़

मुझे अपने साथियों को इनकी पोजीशंस की खबर देनी होगी!

तड़ तड़ तड़ तड़

DELH

C.R.P.

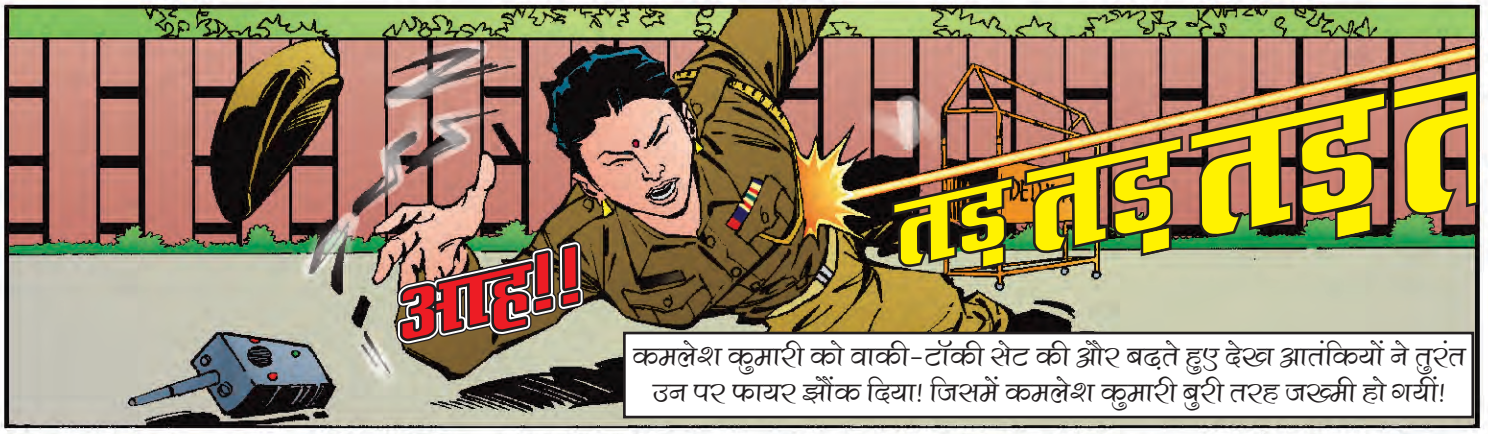

कमलेश कुमारी को वाकी-टॉकी सेट की ओर बढ़ते हुए देख आतंकियों ने तुरंत उन पर फायर झोंक दिया! जिसमें कमलेश कुमारी बुरी तरह जख्मी हो गयीं!

लेकिन उस जख्मी हालत में भी कमलेश कुमारी के लिए अपना फर्ज सर्वोपरी था! उस वाकी टॉकी सेट तक पहुंच कर उन्होंने आतंकवादियों की पोजीशंस की सटीक जानकारी सभी सिपाहियों को दी!

सभी यूनिट अलर्ट! आतंकी हमला हुआ है! एक आतंकवादी गेट क्रमांक 01 के पास मौजूद है! दूसरा गेट क्रमांक 02 के पास मौजूद है सभी संसद के भीतर घुसने के प्रयास में हैं!

कमलेश कुमारी ने अपना कर्तव्य तो निभा दिया पर खुद को ना बचा पाई, फिदायीनों की गोलियों से बुरी तरह घायल उस वीरांगना ने घटनास्थल पर ही दम तोड़ दिया, अपनी जान की परवाह किए बगैर अपने फर्ज को निभाते हुए देश की बेटी वीरगति को प्राप्त हो गई।

संसद भवन के बाहर और भीतर सामान्य रूप से मौजूद रहने वाले मीडियाकर्मी सक्रीय हो उठे थे।

आप हमें लाइव देख रहे हैं संसद भवन से जहां अभी-अभी कुछ आतंकी तत्वों ने घुसपैठ की है।

जैसा कि आप देख सकते हैं सी.आर.पी.एफ.के बहादुर जवान अपनी जान की परवाह किए बगैर इन आतंकियों से लोहा ले रहे हैं।

कुछ ही देर में देश के हर न्यूज चैनल पर संसद पर हुए इस आतंकी हमले की न्यूज फ्लैश हो रही थी।

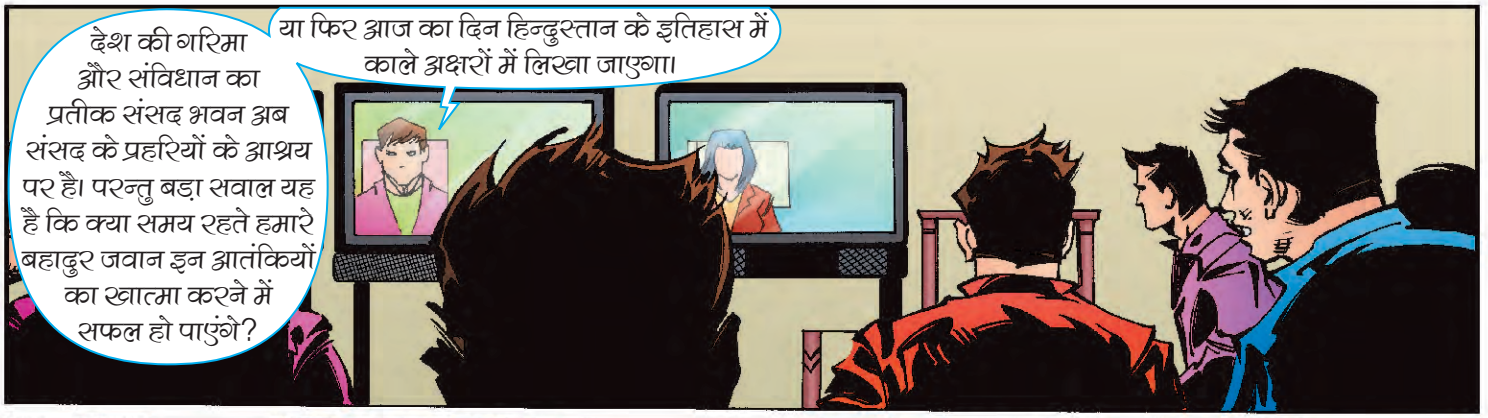
देश की गरिमा और संविधान का प्रतीक संसद भवन अब संसद के प्रहरियों के आश्रय पर है। परन्तु बड़ा सवाल यह है कि क्या समय रहते हमारे बहादुर जवान इन आतंकियों का खात्मा करने में सफल हो पाएंगे?
या फिर आज का दिन हिन्दुस्तान के इतिहास में काले अक्षरों में लिखा जाएगा।

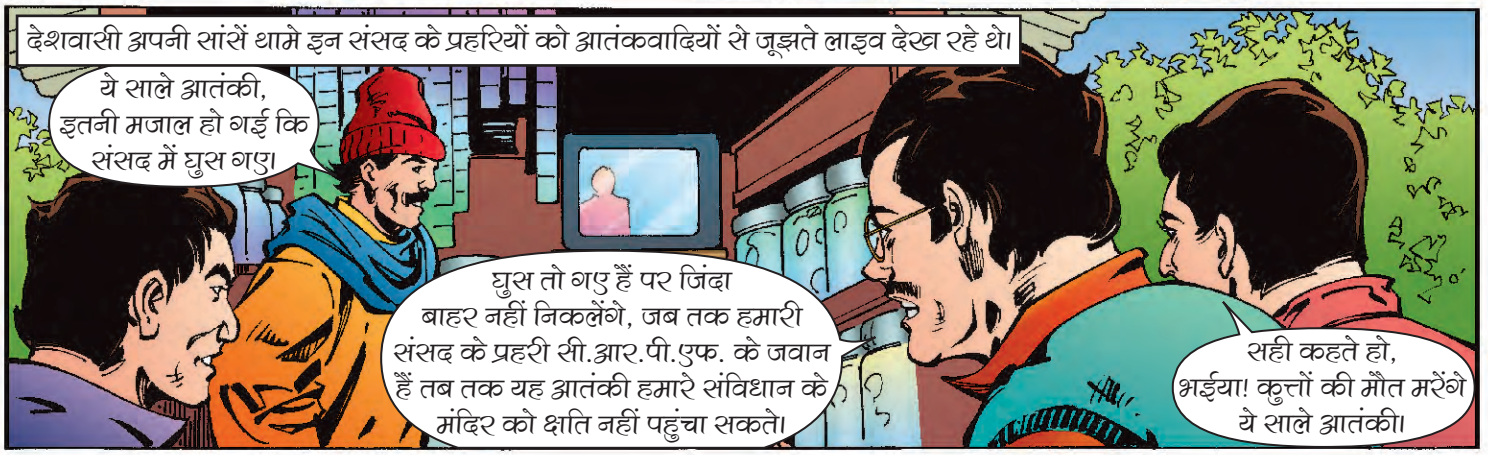
देशवासी अपनी सांसें थामे इन संसद के प्रहरियों को आतंकवादियों से जूझते लाइव देख रहे थे।
ये साले आतंकी, इतनी मजाल हो गई कि संसद में घुस गए।
घुस तो गए हैं पर जिंदा बाहर नहीं निकलेंगे, जब तक हमारी संसद के प्रहरी सी.आर.पी.एफ. के जवान हैं तब तक यह आतंकी हमारे संविधान के मंदिर को क्षति नहीं पहुंचा सकते।
सही कहते हो, भईया! कुत्तों की मौत मरेंगे ये साले आतंकी।

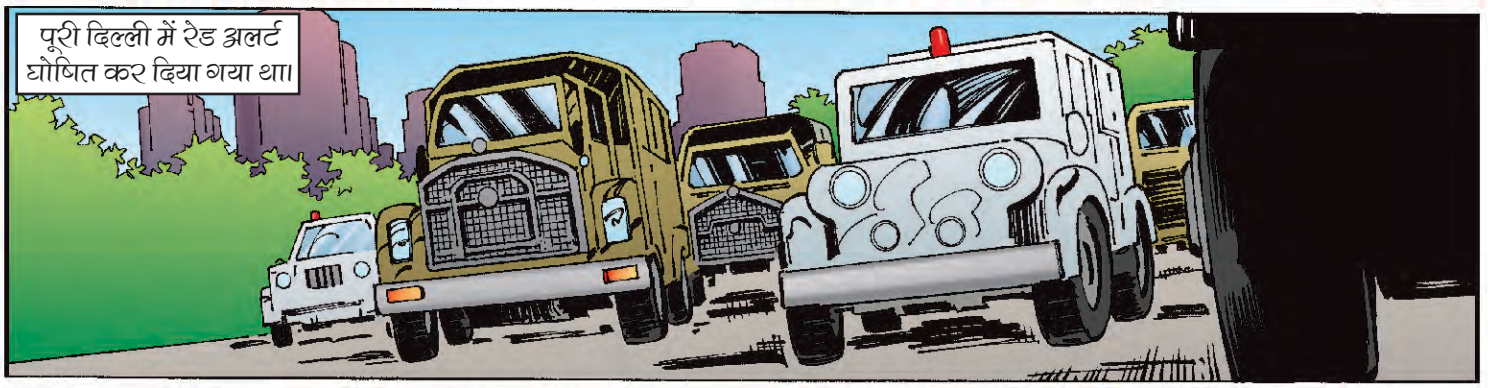
पूरी दिल्ली में रेड अलर्ट घोषित कर दिया गया था।

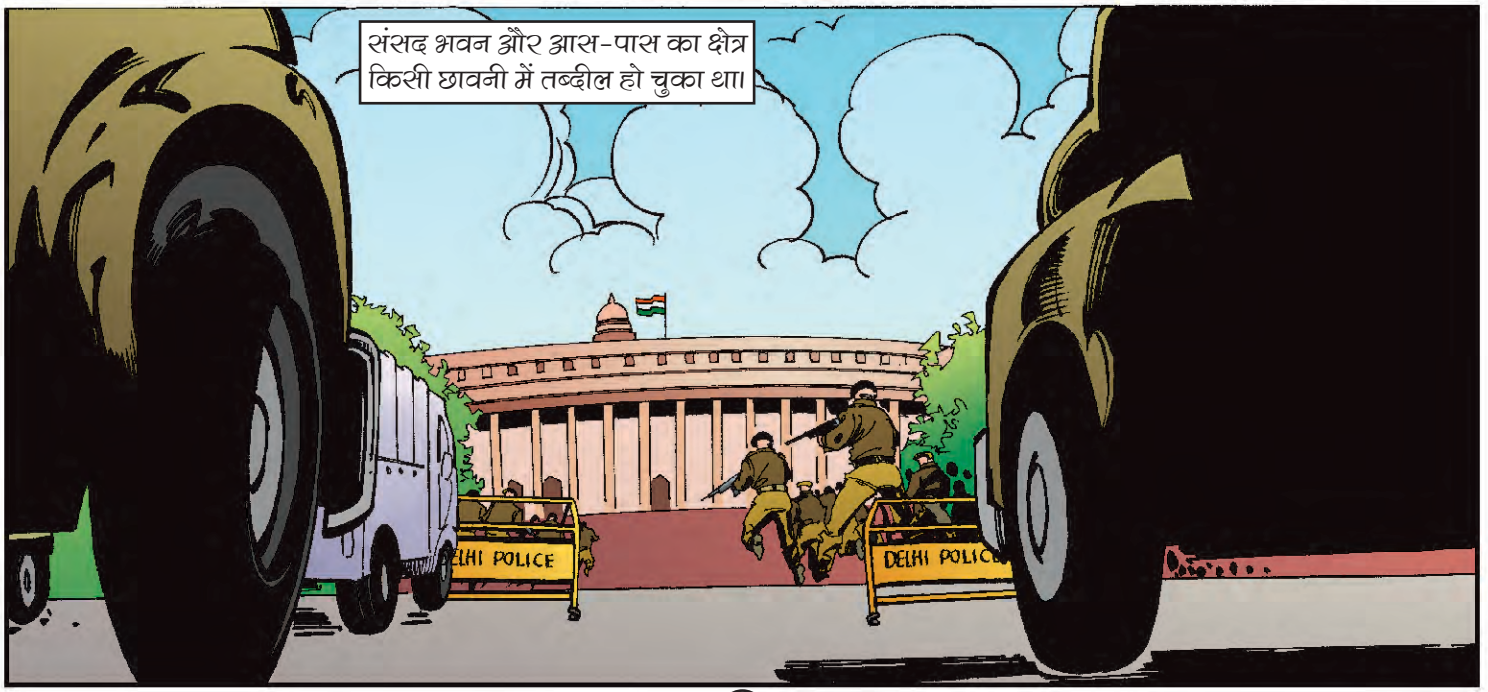
संसद भवन और आस-पास का क्षेत्र किसी छावनी में तब्दील हो चुका था।
DELHI POLICE
DELHI POLICE

हर किसी की बस एक ही दुआ थी, संसद के प्रहरियों द्वारा आतंक का खात्मा हो।
अब तो सब कुछ ऊपरवाले और हमारे जवानों के हाथ में है।

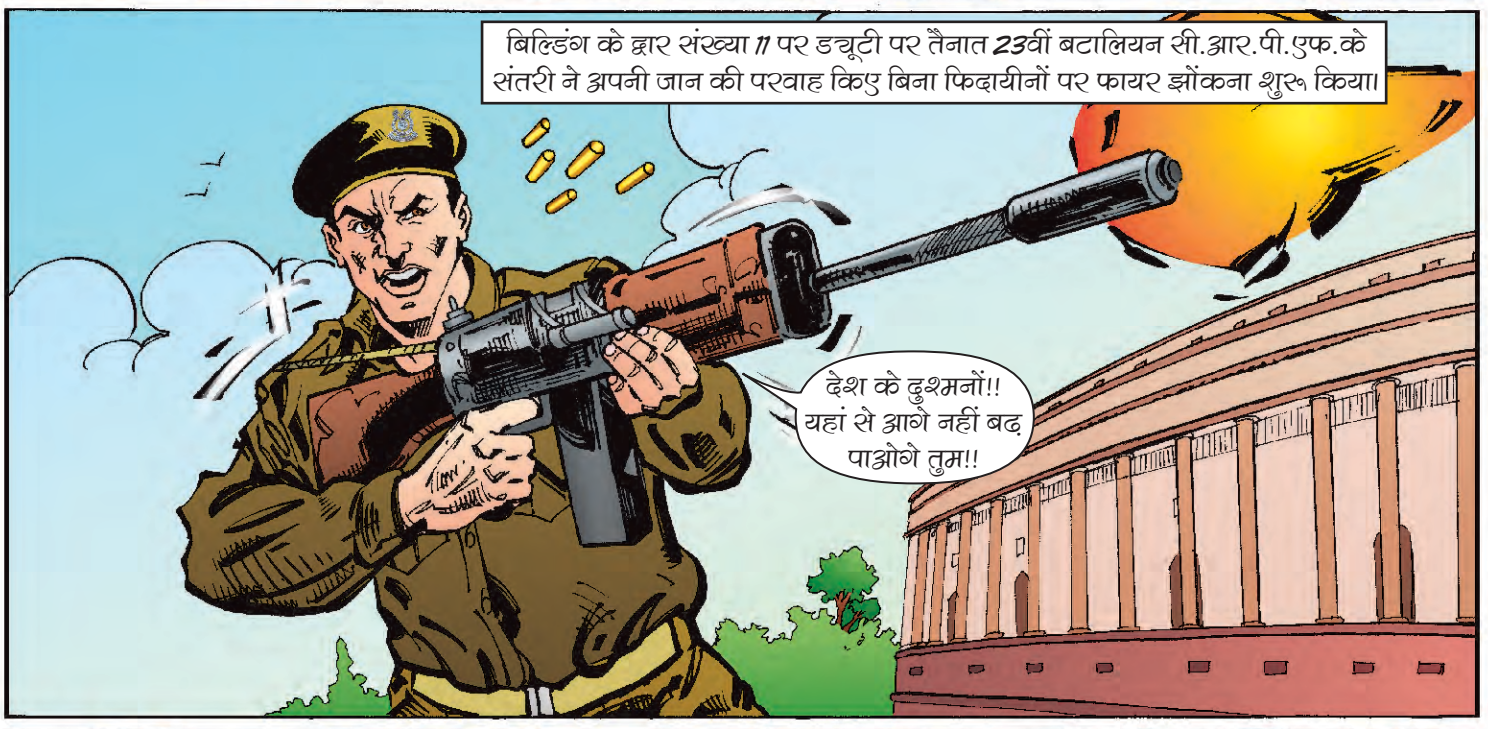
बिल्डिंग के द्वार संख्या 11 पर ड्यूटी पर तैनात 23वीं बटालियन सी.आर.पी.एफ. के संतरी ने अपनी जान की परवाह किए बिना फिदायीनों पर फायर झोंकना शुरू किया।
देश के दुश्मनों!! यहां से आगे नहीं बढ़ पाओगे तुम!!

नहीं, इधर से आगे बढ़े तो उस सी.आर.पी.एफ. वाले की गोलियों का निशाना बन जाएंगे।
पर हमें तो अपना मकसद पूरा करने के लिए संसद के भीतर पहुंचना है भाईजान।

संतरी ने अपनी एस.एल.आर. रायफल से फिदायीनों पर फायर झोंक दिए, चालाक फिदायीन उसका निशाना तो नहीं बने पर वहां से आगे बढ़ने का उनका इरादा जरूर टूट गया।
गेट 05 की ओर से भीतर घुसने की कोशिश करो साथियों।
गेट 01 पर 23 बटालियन सी.आर.पी.एफ.के सुखविंदर सिंह और वाई.बी.थापा तैनात थे।
फिदायीन इधर ही आ रहे हैं।
इनका इरादा गेट 01 से भीतर घुसने का लगता है।
शेरों ने शत्रु को ललकारा।
खबरदार! यहां से आगे नहीं बढ़ सकते तुम लोग!
हथियार डाल दो और आत्मसमर्पण कर दो!
लेकिन दुश्मन ढीठ था, पीछे हटने का इरादा नहीं रखता था।
काफिर की औलादों, हम यहां आत्मसमर्पण करने नहीं आए हैं।
तड़ तड़ तड़

दोनों ओर से ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू हुई।
तड़ तड़ तड़

लेकिन सी.आर.पी.एफ.के शेरों की दिलेरी के सामने टिकने का जिगर फिदायीनों में नहीं होता।
उफ! ताबड़तोड़ फायरिंग कर रहे हैं ये तो! मार गिराएंगे हमें।

धड़ाम!
थापा और सुखविंदर की गोलियों ने उस फिदायीन को अपना निशाना बना लिया जिसने अपने शरीर पर एक्सप्लोसिव बांधे हुए थे, नतीजतन, फौरन ही उसके चीथड़े उड़ गए।

भीतरी इमारत की ओर तैनात सी.आर.पी.एफ. 36 बटालियन के दो जवानों ने भी फिदायीनों पर गोलियां बरसानी शुरू की।
तड़ तड़ तड़ तड़

दो-तरफा पड़ रही मार और मृत साथी के हश्र ने फिदायीनों को अपने पैर पीछे खींचने पर विवश कर दिया।
हमारा साथी मारा गया, अगर पीछे नहीं हटे तो हमारे भी चीथड़े बिखेर देंगे यह सी.आर.पी.एफ. वाले।
जिधर से आए हैं उधर ही वापस भागना होगा।
तड़ तड़ तड़

भय से बौखलाए फिदायीनों ने चारों ओर बेतहाशा गोलियां चलाते हुए पीछे हटना शुरू किया।
तड़ तड़ तड़
पीछे भागो, गोलियां चलाते रहो!!

फिदायीन बिल्डिंग द्वार संख्या 11 के पास की एक दिवार लांघ कर बिल्डिंग गेट संख्या 09 की ओर बढ़े, जोकि पी.एम. जोन एरिया के रूप में जाना जाता है।
इस ओर से भीतर जा पाना मुमकिन नहीं है। हमें दूसरी ओर से भीतर घुसने की कोशिश करनी होगी।

उस स्थान पर 23वीं बटालियन सी.आर.पी.एफ. के जवान संतोष कुमार और उनके कंपनी कमांडर इंस्पेक्टर मोहन प्रसाद उपस्थित थे।
आतंकी फायरिंग करते हुए इस ओर आ रहे हैं।
C.R.P.

धड़ाम
तड़ तड़ तड़
अंधाधुंध फायरिंग के साथ-साथ फिदायीनों ने ग्रेनेड दागने भी शुरू कर दिए।

संतोष कुमार और मोहन प्रसाद ने भी फिदायीनों को ललकारते हुए फायरिंग शुरू की।
हथियार डाल दो पाकिस्तानियों! यहां से तुम जिंदा बचकर वापस नहीं जा सकते।
C.R.P.

ये सी.आर.पी.एफ. वाले इंसान हैं या जिन्न? हर जगह मौजूद हैं।
रट रट रट

संतोष कुमार ने पोजीशन लेते हुए फिदायीनों पर गोलियां बरसाना शुरू किया।
मुझे इन चारों आतंकियों को मार गिराना होगा।

लेकिन यह काम इतना आसान नहीं था। जिस पोजिशन पर संतोष ने कवर लिया था। वहां से फीदायीनों पर सीधा निशाना लेना संभव नहीं था।
धत्त! यहां से इन फिदायीनों को निशाना नहीं बनाया जा सकता, मुझे पोजीशन चेंज करनी होगी।
रट रट रट रट रट
C.R.P.

अगर मैं किसी तरह उस पेड़ तक पहुंचने में कामयाब हो जाऊं तो इन पर सीधा निशाना साध सकता हूं।
जोखिम बड़ा है, पेड़ तक पहुंचने की कोशिश में मैं फिदायीनों के लिए खुला टारगेट होऊंगा, पर दूसरा कोई रास्ता नहीं है।
कवर से निकल कर संतोष कुमार ने अपनी जान की परवाह किए बगैर पेड़ की ओर भागना शुरू किया।
देश के हित की रक्षा करनी है तो अपने हित के बारे में सोचना छोड़ना होगा।

संतोष कुमार के खुले में आते ही फिदायीनों के हथियार गरजने लगे।
जिंदा नहीं बचना चाहिए, मार गिराओ इसे।
तड़ तड़ तड़

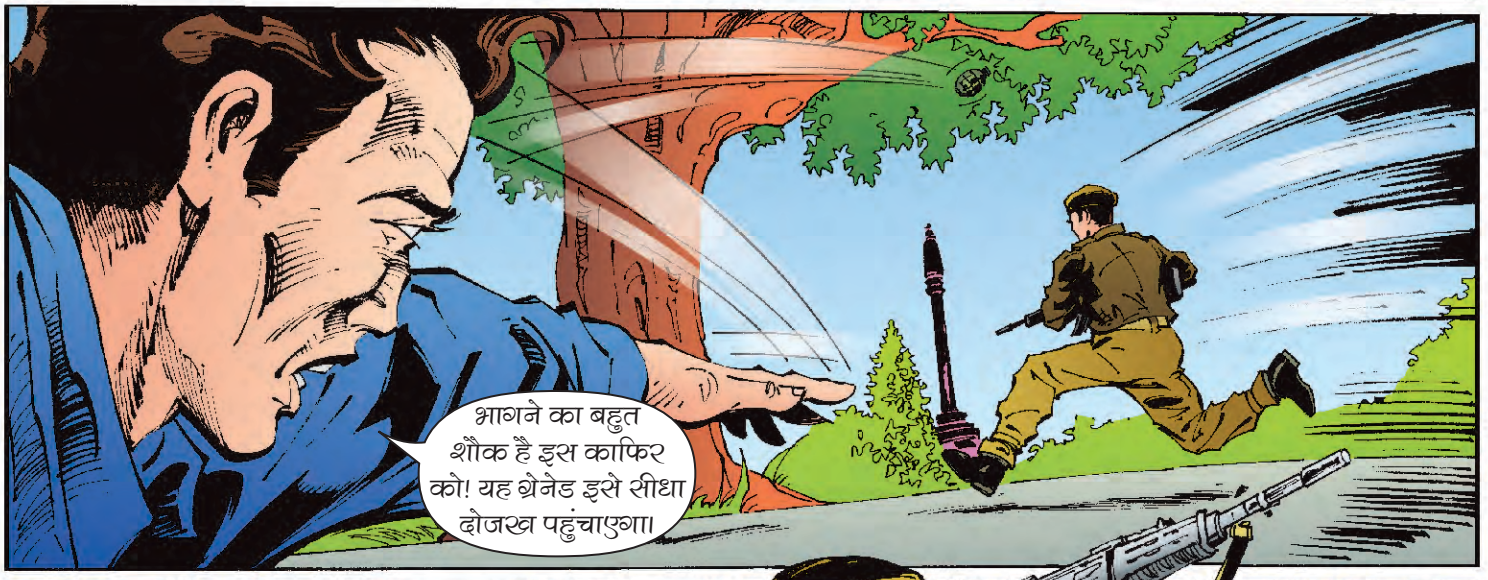
भागने का बहुत शौक है इस काफिर को! यह ग्रेनेड इसे सीधा दोजख पहुंचाएगा।

पर फिदायीन नहीं जानता था कि जो अपने कर्तव्य के पक्के और दिल के सच्चे होते हैं ऊपर वाला भी उनका ही साथ देता है। उस समय, उस मुकाम पर सी.आर.पी.एफ.का कोई एक जवान भी ऐसा नहीं था जिसे अपनी जान की लेशमात्र भी परवाह हो...
धड़ाम

...परवाह थी तो सिर्फ इस बात की कि उनके देश के सम्मान पर कोई आंच नहीं आनी चाहिए।
हम्फ! पहुंच गया!

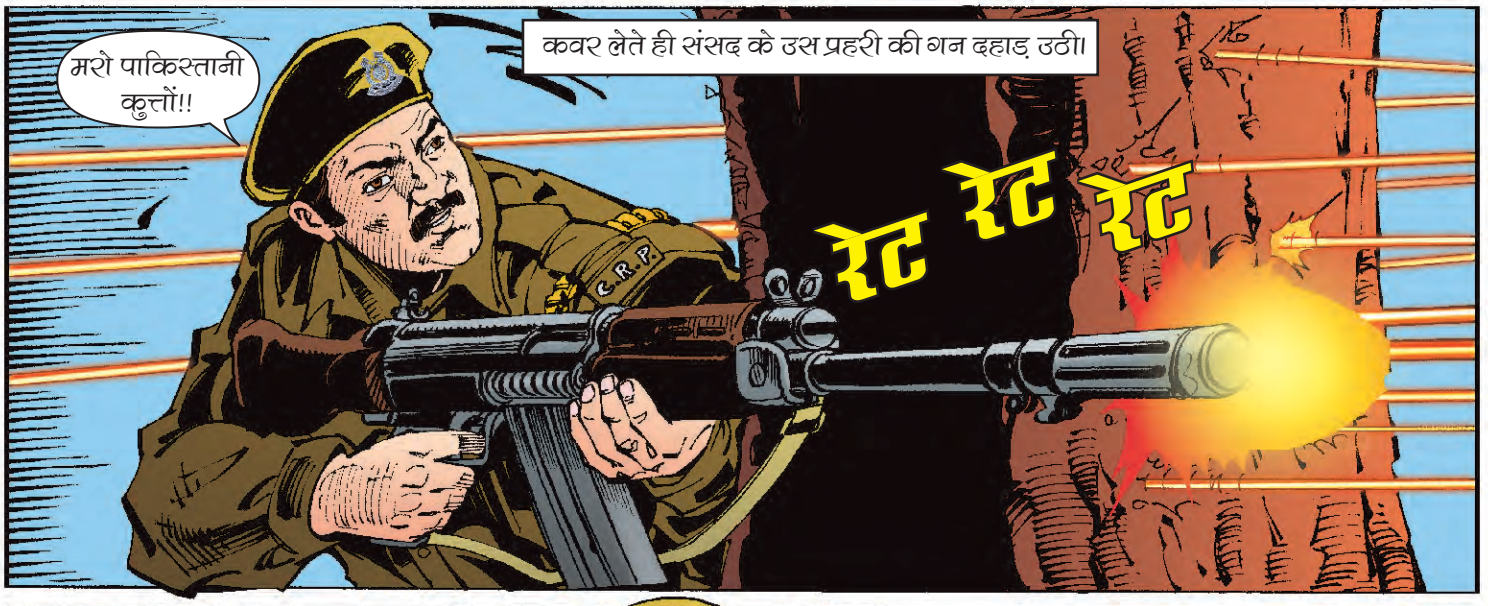
कवर लेते ही संसद के उस प्रहरी की गन दहाड़ उठी।
मरो पाकिस्तानी कुत्तों!!
रेट रेट रेट
C.R.P.

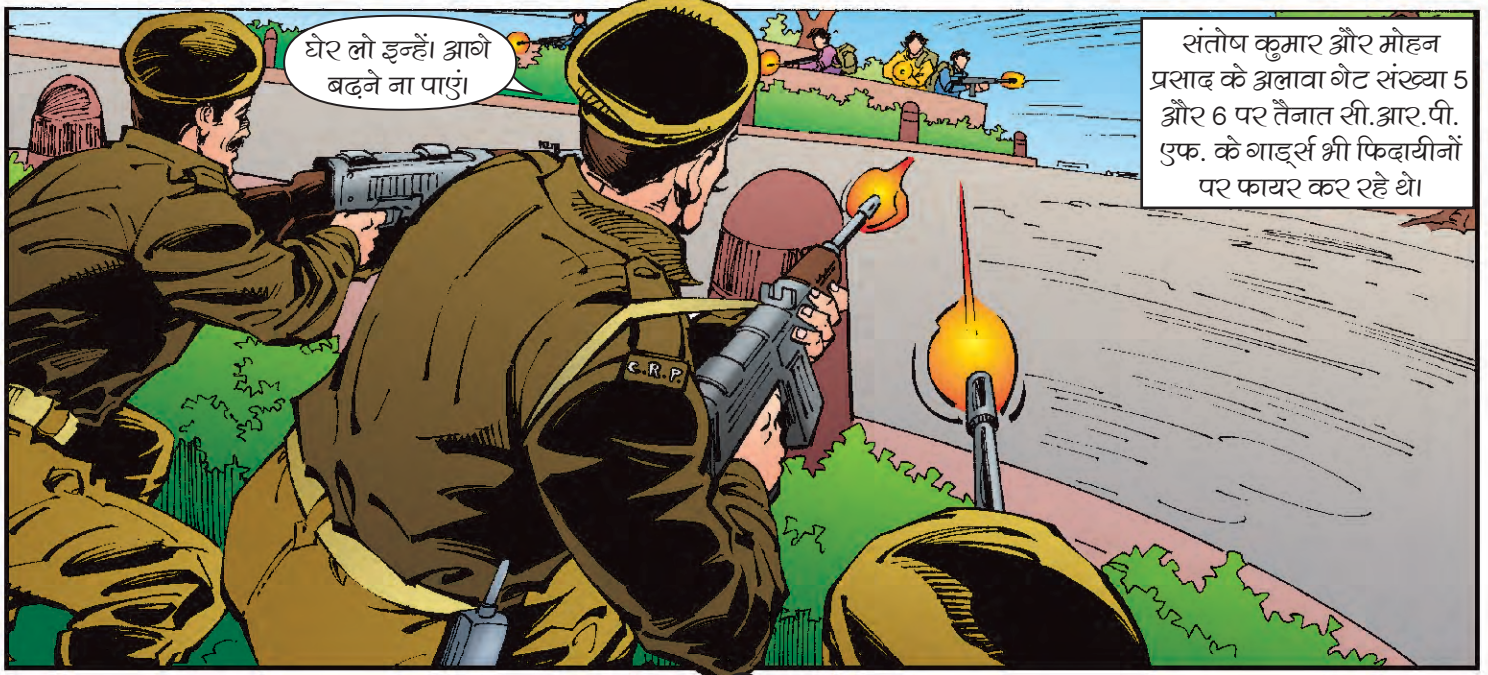
घेर लो इन्हें। आगे बढ़ने ना पाएं।
संतोष कुमार और मोहन प्रसाद के अलावा गेट संख्या 5 और 6 पर तैनात सी.आर.पी. एफ. के गार्ड्स भी फिदायीनों पर फायर कर रहे थे।
C.R.P.

सी.आर.पी.एफ. के जवानों और फिदायीनों के बीच गोलियों का घमासान मच गया।
तड़ तड़ तड़ तड़ तड़
C.R.P.

गेट 4 और 5 से फायरिंग कर रहे सी.आर.पी.एफ.जवानों ने चारों फिदायीनों का ध्यान अपनी ओर उलझा दिया।
उधर! उस गेट की ओर फायर करो, वहां से फायरिंग कर रहे हैं कम्बख्त!!

उनकी उलझन का फायदा उठाते हुए संतोष कुमार ने फिदायीनों पर फायर झोंक दिया।

संतोष की गोलियों ने चार में से एक आतंकी को ढेर कर दिया।
नहीं!
आह
चारों तरफ से पड़ रही मार से बौखला गए थे फिदायीन।
या अल्लाह! यह क्या हो रहा है? हमारे जन्नत जाने की राह का रुख यह सी.आर.पी.एफ.वाले जहन्नुम की ओर किए दे रहे हैं।
अब क्या करें हम लोग?
ग्रेनेड दागो!
बचो!!
धड़ाम

मौका देखकर एक बार फिर फिदायीनों ने गेट संख्या 4 और 5 की ओर से आगे बढ़ने की कोशिश की।
यही मौका है, आगे बढ़ो। गेट से भीतर घुस जाओ!!
तड़ तड़
तड़ तड़
तड़ तड़

लेकिन संतोष कुमार चौकन्ने थे, जैसे ही फिदायीन गेट की ओर बढ़ने के लिए दिवार की ओट से बाहर आए उन्होंने फायरिंग शुरू कर दी।
भागते कहां हो कुत्तों?
C.R.P.

एक और आतंकी संतोष कुमार के हाथों जहन्नुम को रसीद हो गया।

बचे हुए दोनों फिदायीनों ने बाउंड्री की ओट लेकर आगे बढ़ना और फायरिंग करना जारी रखा।
गोलियां चलाता रह, गोलियां रुकीं तो ये सी. आर.पी.एफ.वाले हमारी सांसें भी रोक देंगे।

दोनों बचे हुए फिदायीन गेट संख्या 5 की तरफ बढ़ रहे थे जोकि सिर्फ माननीय प्रधान मंत्री द्वारा प्रयोग में लाया जाता है।

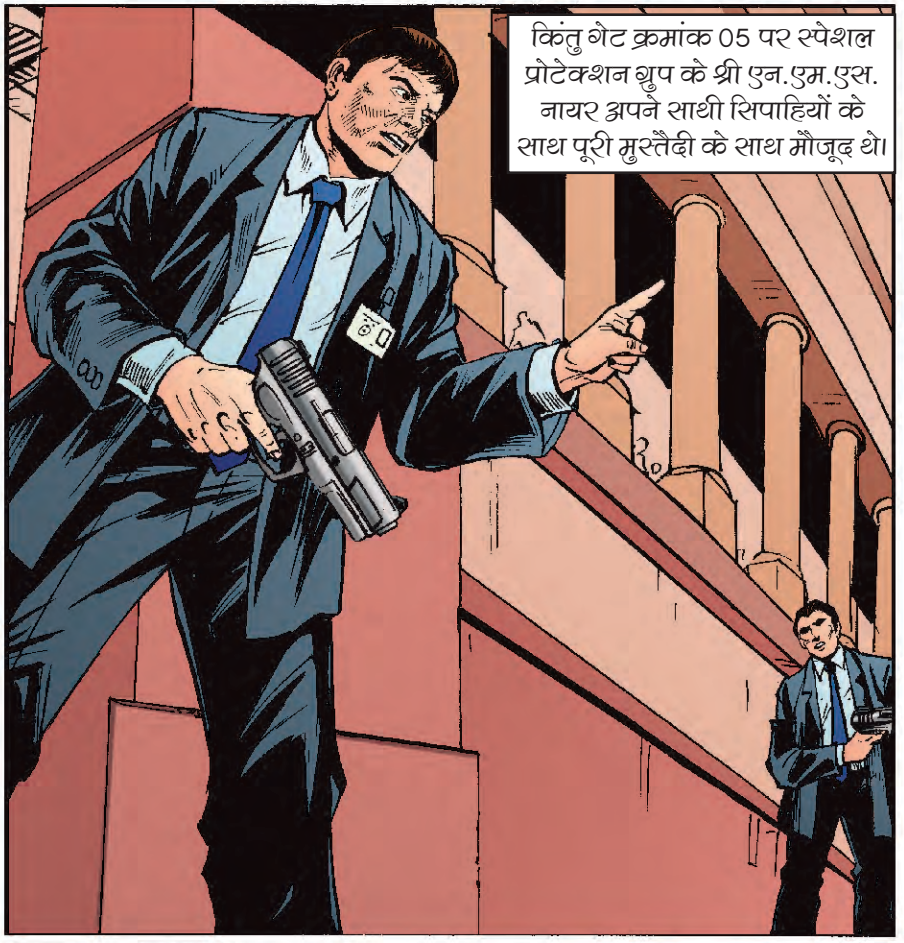
किंतु गेट क्रमांक 05 पर स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप के श्री एन.एम.एस. नायर अपने साथी सिपाहियों के साथ पूरी मुस्तैदी के साथ मौजूद थे।

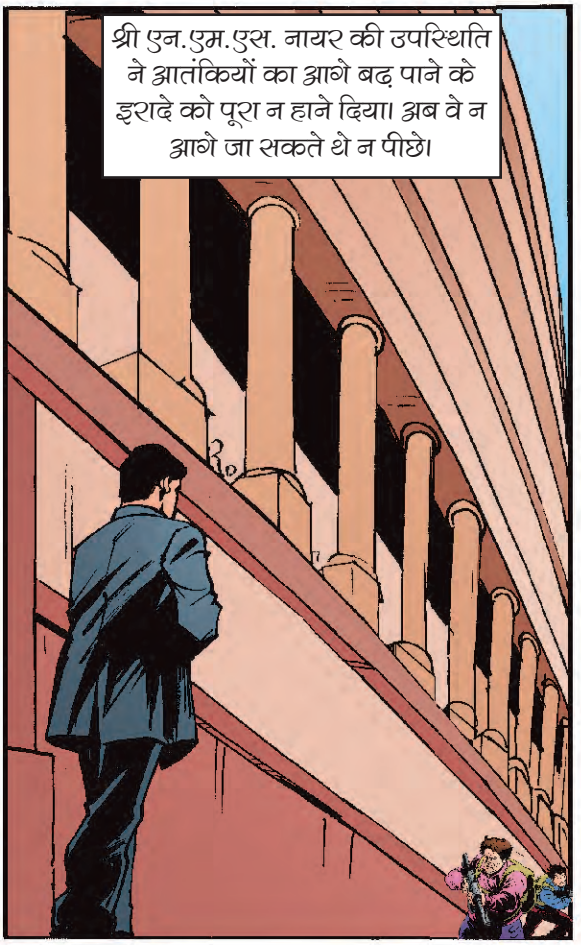
श्री एन.एम.एस. नायर की उपस्थिति ने आतंकियों का आगे बढ़ पाने के इरादे को पूरा न होने दिया। अब वे न आगे जा सकते थे न पीछे।

दूसरी दिशा से संतोष कुमार ने सच्चा निशाना लेकर फायर किया।
C.R.P.

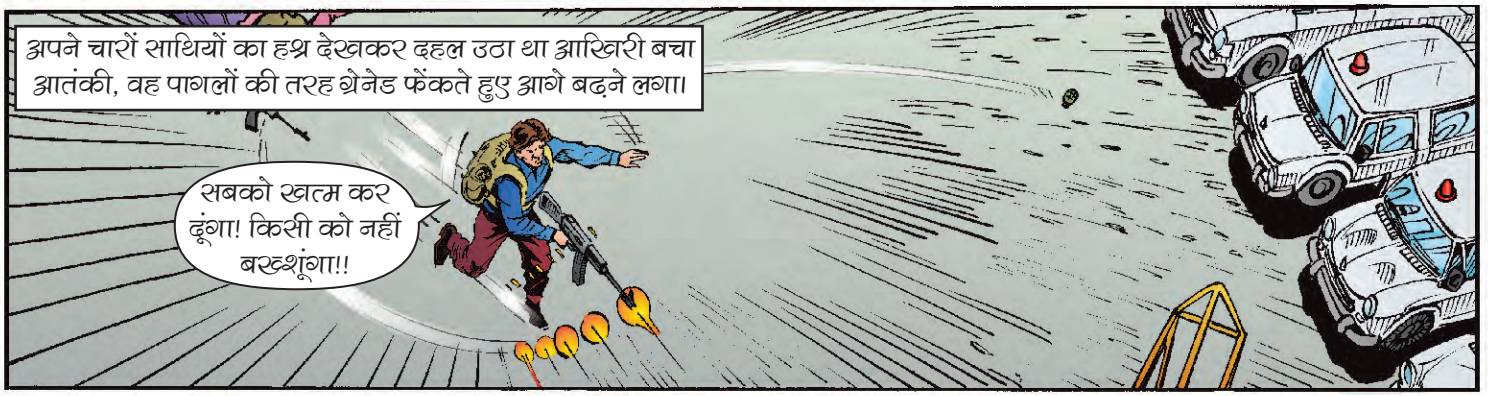

गोली बचे हुए दो फिदायीनों में से एक के सर को तरबूज की तरह फोड़ती हुई निकल गई।
अपने चारों साथियों का हश्र देखकर दहल उठा था आखिरी बचा आतंकी, वह पागलों की तरह ग्रेनेड फेंकते हुए आगे बढ़ने लगा।
सबको खत्म कर दूंगा! किसी को नहीं बख्शूंगा!!
फीदायीन के उछाले गए ग्रेनेड्स का निशाना मंत्रियों की गाड़िया बनीं।
भड़ाम
बिल्डिंग गेट क्रमांक 5 पर तैनात कॉन्स्टेबल श्यामबीर सिंह भी फिदायीन पर फायरिंग कर रहे थे।
रेट रेट रेट रेट

संतोष कुमार आखिरी बचे फिदायीन को भी अपना निशाना बनाने का भरसक प्रयास कर रहे थे।
यह आतंकी बाउंड्री का सहारा लेते हुए गेट 5 की ओर बढ़ रहा है। मेरी शूटिंग रेंज से यह बाहर निकल रहा है, मुझे इसके पीछे जाना होगा।
C.R.P.F.

पूरी तरह सतर्क और सावधान संतोष कुमार एक झटके में बाउंड्री लांघ गए।
ओह! मेरी नजरों से ओझल हो गया वह फिदायीन!

श्यामबीर सिंह ने भी एक पल के लिए एस.एल.आर. को विराम नहीं दिया।
हमारे देश में घुस कर हमारी संसद को ध्वस्त करने का नापाक इरादा लेकर आए थे पाकिस्तानी...

...सी.आर.पी.एफ. के जवानों का खौफ खाया होता। जब तक एक भी जवान जिंदा है मजाल है किसी पाकिस्तानी की कि देश का बाल भी बांका कर जाए।

श्यामबीर सिंह ने 20 राउंड्स फायर किए।
रट रट रट रट रट रट

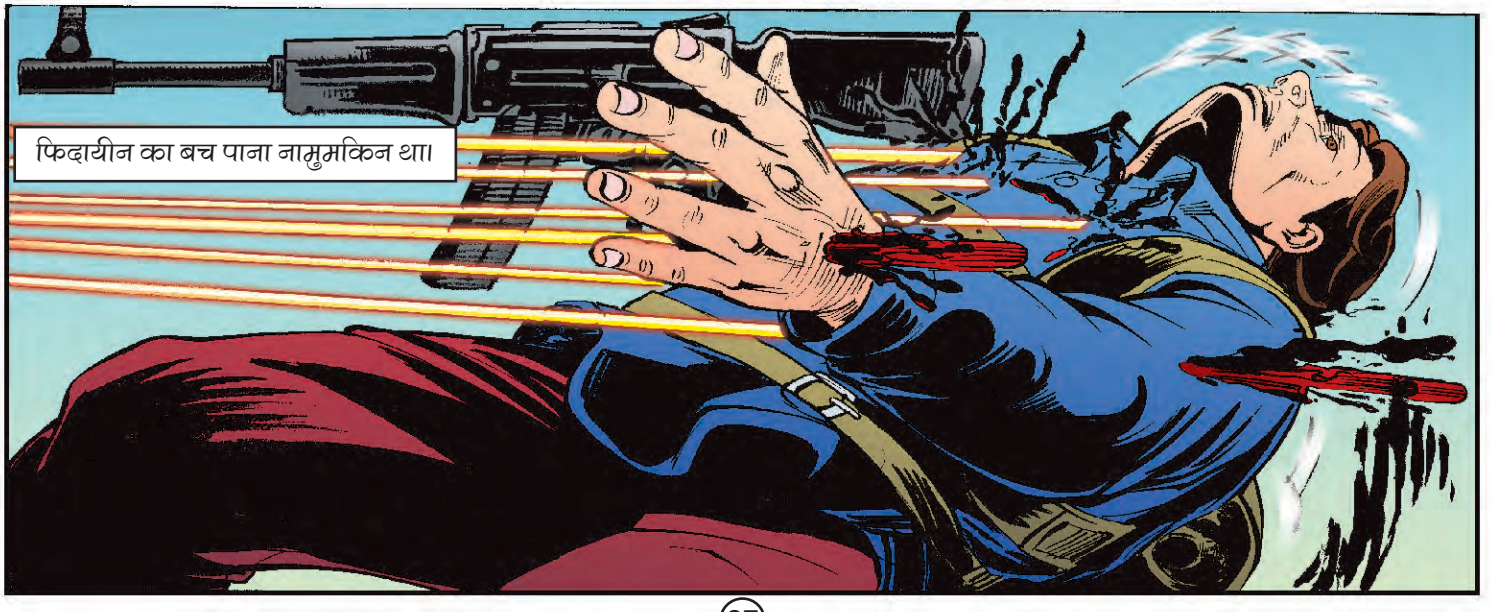
फिदायीन का बच पाना नामुमकिन था।

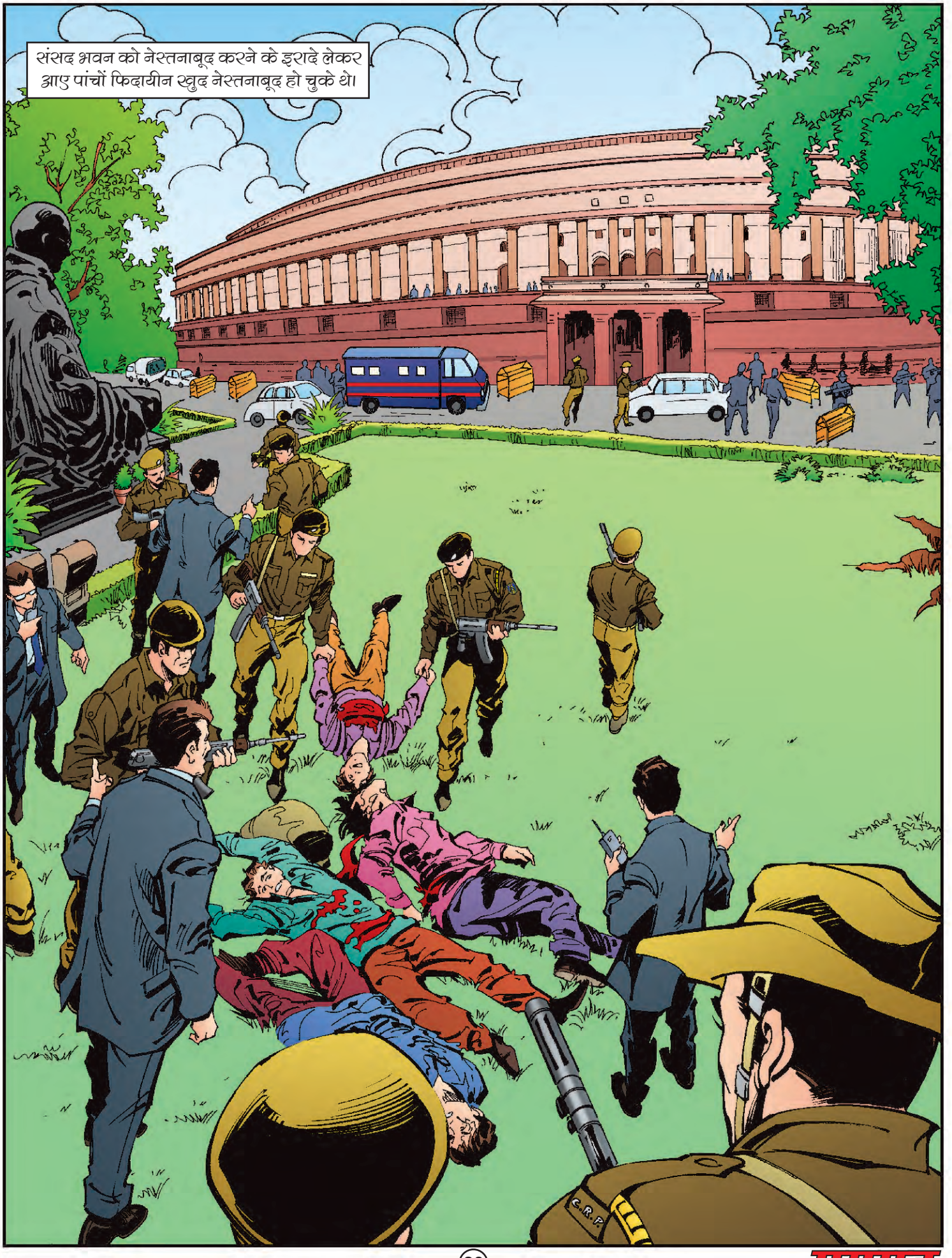

समाप्त

अलंकरण

13 दिसम्बर 2001, देश के संविधान के आधार स्तम्भ संसद भवन को नेस्तनाबूद करने के इरादे से फिदायीनों द्वारा किए गए आत्मघाती हमले को विफल करने के लिए सी.आर.पी.एफ. के अधिकारियों व जवानों द्वारा अतुल्य साहस और वीरता के प्रदर्शन हेतु निम्न अधिकारियों व जवानों को वीरता पुरस्कार से अलंकृत किया गया!

अशोक चक्र से सम्मानित

अमर शहीद वीरांगना श्रीमती कमलेश कुमारी (मरणोपरांत)
तत्कालीन रैंक : कॉन्स्टेबल

शौर्य चक्र से सम्मानित

श्री एन.एम.एस. नायर
तत्कालीन रैंक : कमाण्डेंट
वर्तमान रैंकः सेवानिवृत्त, कमाण्डेंट

श्री वाय.बी. थापा
तत्कालीन रैंक : हैड कॉन्स्टेबल
वर्तमान रैंकः निरीक्षक

श्री संतोष कुमार
तत्कालीन रैंक : कॉन्स्टेबल
वर्तमान रैंकः उप निरीक्षक

श्री श्यामबीर सिंह
तत्कालीन रैंक : कॉन्स्टेबल
वर्तमान रैंकः उप निरीक्षक

श्री सुखविंदर सिंह
तत्कालीन रैंक : कॉन्स्टेबल
वर्तमान रैंकः सहायक उप निरीक्षक

भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री के.आर. नारायणन ने वीरांगना श्रीमती कमलेश कुमारी, महिला कॉन्स्टेबल को मरणोपरांत अशोक चक्र से सम्मानित किया।

भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम श्री एन.एम.एस नायर, कमाण्डेंट को शौर्य चक्र से अलंकृत करते हुए।

भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम श्री वाय.बी. थापा, उप निरीक्षक को शौर्य चक्र से अलंकृत करते हुए।

भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम श्री सुखविंदर सिंह, हैड कॉन्स्टेबल को शौर्य चक्र से अलंकृत करते हुए।

भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम श्री संतोष कुमार, हैड कॉन्स्टेबल को शौर्य चक्र से अलंकृत करते हुए।

भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम श्री श्यामबीर सिंह, हैड कॉन्स्टेबल को शौर्य चक्र से अलंकृत करते हुए।

सरदार पोस्ट एक शौर्य गाथा।

9 अप्रैल को गुजरात के रण ऑफ कच्छ में वीरता साहस और रण कौशल की एक अद्वितीय मिसाल रची गई जब केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक छोटी सी टुकड़ी ने एक पूरी पाकिस्तानी ब्रिगेड को न केवल धूल चटा दी बल्कि उसे पराजित कर पीछे लौटने पर मजबूर कर दिया। दुनिया के युद्ध इतिहासों में दर्ज एक अनूठी शौर्य गाथा।

वीर भृगुनंदन

यह केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रथम कीर्ति चक्र प्राप्त करने वाले अमर शहीद भृगुनंदन चौधरी की वीरता, साहस, बलिदान और मित्र भाव की पराकाष्ठा की कहानी है। यह कहानी है उस जवान की जो बारूदी सुरंग में अपनी दोनों टांगें गंवा देने के बावजूद माओवादियों का सामना करता रहा। यह वह स्थिति थी जब माओवादियों के हमले में उसका पूरा दल बिखर गया था और उसके साथी सिपाही का भी दाहिना बाजू बारूदी सुरंग के विस्फोट में उड़ गया था। उस स्थिति में भी उसने न केवल माओवादियों के एक बहुत बड़े दल को रोके रखा बल्कि अपने घायल साथियों की भी मदद की।

शूरवीर प्रकाश

एक शौर्य चक्र और छः पुलिस वीरता पदकों से सम्मानित देश के सर्वाधिक अलंकृत पुलिस अधिकारी प्रकाश रंजन मिश्र के हैरत अंगेज कारनामों से भरपूर एक चित्रकथा। जानिए कैसे एक वीर अधिकारी ने एक गोली जांघ में, चार गोलियां दाहिने कंधे के नीचे सीने में और एक गोली कान को छील कर निकल जाने के बावजूद, माओवादियों के विरूद्ध एक बड़े अभियान को सफलतापूर्वक अंजाम दिया।

जाँबाज इलंगो

छत्तीसगढ़ के बीजापुर में माओवादियों पर काल बन कर टूट पड़े तमिलनाडू के एक साधारण ग्रामीण परिवार से आए श्री एस. इलंगो की शौर्य गाथा जिन्हें तीन वीरता पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के पुलिस उप-महानिरीक्षक श्री एस. इलंगो देश के उन दिलेर अधिकारियों में गिने जाते हैं जिन्होंने अपने साहस व सूझबूझ से देश में आतंकवादियों, माओवादियों और देशद्रोहियों के विरूद्ध कई बड़े अभियानों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया है।

अयोध्या के शूरवीर

5 जुलाई, 2005 स्वचालित रायफल्स, हथगोलों और रॉकेट लाँचर्स से लैस आतंकवादियों को अयोध्या स्थित विवादित स्थल को ध्वस्त करने से रोकना किसी भी सुरक्षा बल के लिए एक दुष्कर कार्य हो सकता था, लेकिन उन आतंकवादियों और विवादित स्थल में मौजूद दर्शनार्थियों के बीच एक अभेद्य सुरक्षा दीवार बन कर खड़े हो गए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी.आर.पी.एफ.) की 33वीं बटालियन के 'डी' कंपनी के जवान, जिन्होंने ना केवल उन सभी आतंकवादियों को मार गिराया बल्कि यह भी सुनिश्चित किया कि विवादित स्थल और दर्शनार्थियों को लेश मात्र भी क्षति न पहुंचे!

दिलेर दिव्यांशु

नक्सलियों के बीच भय के प्रतीक श्री दिव्यांशु की शौर्य गाथा। जिन्होंने अपने बाल्यकाल में ही केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल का हिस्सा बनने का निर्णय ले लिया था। उप कमाण्डेंट श्री दिव्यांशु अपने अडिग इरादों और दृढ़ निश्चय के बल पर केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में भर्ती हो कर कोबरा कमांडो के रूप में कई दुष्कर ऑपरेशनों को निर्भयता से अपने सफल अंजाम तक पहुंचा कर दो बार पुलिस पदक से सम्मानित हुए।

हॉट स्प्रिंग्स

21 अक्टूबर,1959-लद्दाख के हॉट स्प्रिंग्स क्षेत्र में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक छोटी सी टुकड़ी ने मातृभूमि की रक्षा हेतु अपने साहस और पराक्रम द्वारा चीन की सैनिक टुकड़ी से जमकर लोहा लिया। मातृभूमि की रक्षा का कर्तव्य निभाते हुए देश के 10 बहादुर जवान वीरगति को प्राप्त हुए। देश के उन वीर सपूतों के बलिदान की स्मृति में 21 अक्टूबर को देश के सभी पुलिस बलों द्वारा शहीद स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाता है!

अद्वितीय अंजनी

हाथपोखर, बिहार के एक मध्यम वर्गीय परिवार से आए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के सहायक कमाण्डेंट श्री अंजनी कुमार की शौर्य गाथा। श्री अंजनी कुमार ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की कोबरा टीम के सहायक कमाण्डेंट के रूप में अतुलनीय वीरता और अदम्य साहस का परिचय देते हुए नक्सलियों व आतंकियों के खिलाफ अनेक सफल अभियानों को अंजाम दिया, जिसके लिए उन्हें दो बार वीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया।

13 दिसम्बर 2001, देश के संविधान के आधार स्तम्भ संसद भवन को नेस्तनाबूद करने के इरादे से फिदायीनों द्वारा किए गए आत्मघाती हमले को सी.आर.पी.एफ. के अधिकारियों व जवानों ने अतुल्य साहस और वीरता का प्रदर्शन करते हुए विफल किया। उन्होंने न केवल सभी आतंकियों को मार गिराया अपितु संसद भवन तथा उसमें मौजूद सांसदों एवं कर्मचारियों पर लेश मात्र भी आंच नहीं आने दी।